

## भारतीय भाषाओं में प्रौद्योगिकियों का विकास

आशुतोष कुमार<sup>1</sup> एवं अशोक कुमार<sup>2</sup>

भारत जैसे बहुभाषी देश में, किसी भी गतिविधि में अंतर्निहित प्राथमिक चिंता और चुनौती अधिक से अधिक लोगों को उनकी अपनी भाषा में सूचना और सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करना है। चूंकि दुनिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के आसपास केंद्रित तकनीकी क्रांति के बीच में है, मानव भाषा प्रौद्योगिकी (एचएलटी) में प्रगति लोगों के लिए मशीनों के साथ बातचीत को सुविधाजनक बनाती है। भारत में, बहुभाषी वेब-सामग्री त्वरित विकास के लिए तैयार है और इसलिए, उपयोगकर्ता के अनुकूल और कम लागत वाले उपकरण, एप्लिकेशन और सामग्री प्रदान करना एक बड़ी चुनौती है जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में आईसीटी बुनियादी ढांचे के उपयोग को सक्षम बनाती है। भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी में जनसंख्या विभिन्न पृष्ठभूमि वाले लोगों की एक विस्तृत श्रृंखला को लाभ पहुंचाने की शक्ति है, एक अनपढ़ भूमि जोतने वाला अपनी छोटी भूमि के प्रासंगिक भूमि रिकॉर्ड को स्थानीय भाषा में जानना चाहता है और साथ ही निरक्षर मरीज़ अपनी-अपनी भाषाओं में डॉक्टर से बात कर सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के पास टीडीआईएल (भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास) का एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य भाषा अवरोध के बिना मानव-मशीन संपर्क को

सुविधाजनक बनाने के लिए सूचना प्रसंस्करण उपकरण और तकनीक विकसित करना और बहुभाषी ज्ञान संसाधनों का निर्माण और उन तक पहुंच और उन्हें नवीन उपयोगकर्ता उत्पादों और सेवाओं को विकसित करने के लिए एकीकृत करना। कार्यक्रम के प्राथमिक उद्देश्यों में आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त सभी 22 भारतीय भाषाओं के लिए सॉफ्टवेयर टूल्स और एप्लिकेशन को विकसित करना और बढ़ावा देना, नवीन उत्पादों के लिए अग्रणी भविष्य की प्रौद्योगिकियों के सहयोगात्मक विकास में योगदान देना शामिल है। और सेवाएँ, भाषा प्रौद्योगिकी उत्पादों के प्रसार एवं सभी स्तरों पर समाधान के साथ मानकीकरण प्रदान करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती हैं।

### राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन: भाषिणी

इसे भाषिणी के नाम से भी जाना जाता है। बजट 2021 में माननीय वित्त मंत्री द्वारा इसकी घोषणा की गई है और मार्च 2022 में प्राकृतिक भाषा के उपयोग की दृष्टि से तीन साल के मिशन के रूप में शुरू किया गया है। भाषाई बाधाओं को पार करने के उद्देश्य से योगदानकर्ताओं, भागीदार संस्थाओं और नागरिकों का एक विविध पारिस्थितिकी बनाने के लिए प्रौद्योगिकियां, जिससे आत्मनिर्भर भारत में डिजिटल समावेशन और डिजिटल सशक्तिकरण सुनिश्चित हो सके, भाषिणी को प्रयोग में लाया गया है। मिशन भाषिणी का उद्देश्य सभी

<sup>1</sup> राष्ट्रीय पाठ्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो

<sup>2</sup> रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

भारतीयों को अपनी भाषाओं में इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं तक आसान पहुंच प्रदान करना और भारतीय भाषाओं में सामग्री को बढ़ाना है।

इस उद्देश्य से, मिशन का लक्ष्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) का उपयोग करके विभिन्न भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के बीच अनुवाद की सुविधा के लिए एक आसान और उत्तरदायी पारिस्थितिकी को सक्षम करने के लिए एक सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित करना है। मशीन एडेड ट्रांसलेशन (MAT), ऑटोमैटिक स्पीच रिकॉग्निशन (ASR), टेक्स्ट टू स्पीच सिस्टम (TTS), ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (OCR), स्पीच टू स्पीच ट्रांसलेशन (S2S) जैसी मुख्य भाषा प्रौद्योगिकियों के निर्माण के लिए कुछ प्रमुख पहल की जा रही हैं। साथ ही भारतीय भाषाओं में आईटी उपकरण के प्रयोग को बढ़ाने और बाधाओं को दूर करने के उपाय किए जा रहे हैं।

उपरोक्त उद्देश्य के अनुरूप, भारतीय भाषा प्रौद्योगिकियों पर उक्त सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 4.7.2022 को 'डिजिटल इंडिया भाषिनी' के रूप में मिशन के शुभारंभ के बाद, भाषिनी फिलहाल <https://bhasini.gov.in> पर लाइव है।

### भाषा और प्रौद्योगिकियां

नई शिक्षा नीति के अनुसार जहां भी संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक, लेकिन अधिमानतः ग्रेड 8 और उससे आगे तक शिक्षा का माध्यम घरेलू भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी। इसके बाद, जहां भी संभव हो, घरेलू/स्थानीय भाषा को एक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता

रहेगा। इसका पालन सार्वजनिक और निजी दोनों स्कूलों द्वारा किया जाएगा। विज्ञान सहित उच्च गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकें घरेलू भाषाओं/मातृभाषा में उपलब्ध कराई जाएंगी।

“ऐसे मामलों में जहां घरेलू भाषा/मातृभाषा पाठ्यपुस्तक सामग्री उपलब्ध नहीं है, शिक्षकों और छात्रों के बीच लेनदेन की भाषा जहां भी संभव हो, घरेलू भाषा/मातृभाषा ही रहेगी। शिक्षकों को उन छात्रों के साथ द्विभाषी शिक्षण सामग्री सहित द्विभाषी दृष्टिकोण का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा जिनकी घरेलू भाषा शिक्षा के माध्यम से भिन्न हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के संयोजन से सहायता प्राप्त भाषा प्रौद्योगिकी, तत्काल भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों में से एक होने जा रही है। यह भाषाई पारिस्थितिकी तंत्र के पूरे वैश्विक परिदृश्य को बदल देगा। शीघ्र ही तथाकथित वैश्विक भाषाएँ वैश्विक नहीं रह जायेंगी। मातृभाषाओं का बोलबाला होगा। भारत 1.3 अरब लोगों का देश है, लोग इसकी ताकत हैं। यहां कुल 270 मातृभाषाएँ हैं, जिन्हें 121 भाषाओं के अंतर्गत समूहीकृत किया गया है। भारत के संविधान ने अपनी आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को सूचीबद्ध किया है जो भारत की लगभग 97% आबादी को कवर करती हैं। एक अध्ययन के अनुसार ( उमा महेश्वर राव , 2017 में ), भारत की जीडीपी का 82.73% (स्थिर मूल्यों पर वर्ष 2004-5 में) भारतीय भाषाओं के उपयोग से आता है। इनके लिए वास्तव में आवश्यकता है कि भारतीय भाषाओं को भाषा प्रौद्योगिकी से सुसज्जित किया जाए। न केवल प्रमुख अनुसूचित भाषाएँ बल्कि सभी 121 भाषाएँ। भारतीय

भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (टीडीआईएल) ने अपने विजन और मिशन वक्तव्य में कहा है कि "डिजिटल एकजुटता और सभी के लिए ज्ञान" और "भाषा की बाधा पर काबू पाकर संचार करना और ज्ञान श्रृंखला को आगे बढ़ाना।" पिछले तीन दशकों में, टीडीआईएल ने वास्तव में विभिन्न भाषाओं में भाषा प्रौद्योगिकी उपकरणों, अनुप्रयोगों और अन्य संसाधनों के प्रसार के लिए अपनी गतिविधियों में विविधता लाई है। भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी के अनुसंधान और विकास को टीडीआईएल द्वारा बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया जाता है। इसमें निम्नलिखित में से कुछ इस प्रकार हैं: अतः प्रथम एन्कोडिंग मानकों का एकीकरण: भारतीय भाषा लिपियों की यूनिकोड एन्कोडिंग भारतीय भाषाओं के लिए सभी भाषा प्रौद्योगिकी मानकीकरण में मानक एन्कोडिंग बन गई है; द्वितीय. लिपि की बाधा: सभी भारतीय लिपियों में एक समान लिपि रूपांतरण आम संसाधन बन गया है; इस प्रकार यह किसी भी भारतीय भाषा को किसी भी लिपि में पढ़ने और लिखने में सक्षम बनाता है।

### टीडीआईएल के प्रयास

मोबाइल एप्लिकेशन: मोबाइल पर भारतीय भाषा एप्लिकेशन के उपयोग ने हमारे संचार को काफी हद तक बढ़ाया है। कॉर्पोरा पहल के अंतर्गत डिजिटल कॉर्पोरा में आज 3 मिलियन शब्द आकार के विभिन्न आकारों के मोनोलिंगुअल, समृद्ध कॉर्पोरा कई प्रमुख और छोटी भाषाओं में उपलब्ध हैं। 3 मिलियन शब्दों की लंबाई वाले चलित पाठ नमूनों का डिजिटल कॉर्पोरा उपलब्ध है , बारह भारतीय भाषाओं में एकभाषी कॉर्पोरा : हिंदी, उर्दू, कश्मीरी, पंजाबी, मराठी, असमिया, बंगाली, उड़िया, तेलुगु

, तमिल, मलयालम और कन्नड़ में तैयार है; (टीडीआईएल द्वारा वित्त पोषित और एनआरएलसी, ईआरएलसी और सीआईआईएल द्वारा विकसित)।

### भाषा प्रौद्योगिकी पर परियोजनाएं:

भारतीय भाषा कॉर्पोरा पहल (आईएलसीआई) सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (डीआईटी), भारत सरकार ने स्रोत भाषा के रूप में हिंदी के साथ 11 भारतीय भाषाओं में पर्यटन और स्वास्थ्य डोमेन में समानांतर एनोटेटेड कॉर्पोरा बनाया है। आईएलसीआई 11 सदस्यों के साथ एक कंसोर्टिया परियोजना है। जिसमें IIITM जेएनयू, आईएसआई कोलकाता, उत्कल विश्वविद्यालय उड़ीसा, आईआईटी मुंबई, गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद, गोवा विश्वविद्यालय, द्रविड़ विश्वविद्यालय आंध्र प्रदेश, तमिल विश्वविद्यालय तमिलनाडु और पंजाब विश्वविद्यालय शामिल हैं। स्पीच कॉरपोरेशन टीडीआईएल, डीआईटीवाई ने बांग्ला , असमिया और मणिपुरी के लिए सीडीएसी, कोलकाता; तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ को आईआईटी, मद्रास और आईआईएससी, बेंगलुरु द्वारा और हिंदी, पंजाबी, मराठी, उर्दू सीडीएसी, पुणे को एनोटेटेड स्पीच कॉरपोरेशन (8.5 जीबी) के विकास के लिए प्रायोजित किया। भारतीय भाषाओं के लिए भाषाई डेटा कंसोर्टियम, सीआईआईएल, मैसूर द्वारा विकसित भारतीय भाषा भाषण डेटाबेस (17 भाषाएँ) तैयार किया गया। एमिले कॉर्पोरा (अल्पसंख्यक भाषा इंजीनियरिंग को सक्षम करना): 13 भारतीय भाषाओं को शामिल करते हुए लिखित और मौखिक डेटा तैयार किया गया।

भारतीय भाषाओं के लिए लेक्सिकल डेटा बेस इलेक्ट्रॉनिक/डिजिटल लेक्सिका को विभिन्न परियोजनाओं जैसे अनुसारक ( आईआईटी कानपुर , हैदराबाद विश्वविद्यालय , आईआईआईटी हैदराबाद) अंग्रेजी भारती (आईआईटीके), अनुवादक ( सीडीएसी ) के हिस्से के रूप में विकसित किया गया है। पुणे , थिसॉरस और शब्दकोश निर्माण उपकरण; ई- महाशब्दकोश उच्चारण के साथ डोमेन आधारित द्विभाषी और द्वि-दिशात्मक हिंदी/अंग्रेजी शब्दकोश है इंडोवर्डनेट सिद्धांत रूप में, भारत की 18 अनुसूचित भाषाओं के वर्डनेट का एक जुड़ा हुआ शाब्दिक ज्ञान आधार है; असमिया, बांग्ला , बोडो , गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया , पंजाबी, संस्कृत, तमिल , तेलुगु और उर्दू।

**रूपात्मक विश्लेषक:** भारतीय भाषाओं का शब्द स्तर विश्लेषण विभिन्न अनुवाद परियोजनाओं के उपोत्पाद के रूप में विकसित और हिंदी, तेलुगु, तमिल, मलयालम, कन्नड़, मराठी, पंजाबी, उर्दू और बांग्ला के लिए उपलब्ध है । भारतीय भाषाओं के लिए शैलो पार्सर टूल्स के हिस्से के रूप में, कश्मीरी, डोगरी , कोंकणी के लिए रूपात्मक विश्लेषक बनाए गए हैं। गुजराती, उड़िया , असमिया, मणिपुरी, नेपाली, संथाली, बोडो और हिंदी CALTS और हैदराबाद विश्वविद्यालय में।

**ऑन्टोलॉजिकल विश्लेषक:** भारतीय भाषाओं के लिए ऑन्टोलॉजिकल एनालाइज़र के अंतर्गत चयनित भारतीय भाषाओं जैसे हिंदी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और अंग्रेजी के

लिए शब्दों का सिमेंटिक फ़ीचर आधारित विश्लेषण किया गया है।

**हाइपरग्रामर:** भारतीय भाषाओं के लिए हाइपरग्रामर के अंतर्गत विभिन्न भारतीय भाषाओं के लिए हाइपरटेक्स्ट प्रारूप पर आधारित एक गैर-रेखीय रूप से व्यवस्थित गतिशील व्याकरण तैयार किया गया है।

**मशीनी अनुवाद प्रणाली:** कम्प्यूटेशनल विश्लेषण और भाषाओं के निर्माण का अंतिम लक्ष्य मशीनी अनुवाद प्रणाली का निर्माण करना है। मशीनी अनुवाद का विकास एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसकी शुरुआत पिछली सहस्राब्दी के शुरुआती अस्सी के दशक में हुई थी। इसका प्रमुख प्रायोजक भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी प्रसार और विकास केंद्र (टीडीआईएल), एमआईटी, भारत सरकार है। इसने विभिन्न परियोजनाएं शुरू की हैं, जैसे, भारती (अंग्रेजी-आईएल), और अणुभारती (आईएलआईएल), अनुसारक ( भारतीय भाषाओं से हिंदी, मराठी, पंजाबी, तेलुगु और कन्नड़, तमिल सहित अन्य भारतीय भाषाओं के बीच भाषा पहुंच ), मंत्र- राजभाषा (2004 -2010), प्रचारक- राजभाषा (2002 -2005), मंत्र- राज्य सभा (2001-2007); ईआईएलएमटी चरण- I (2006 - 2010) और चरण- II (2010 - 2016) जहां सी- डैक, पुणे ने कंसोर्टिया लीडर की भूमिका निभाई है। इसमें अनुवादक , संपर्क , बहुभाषक आदि प्रमुख कार्य हैं। आईएल-आईएलएमटी ( चरण II और चरण II II, संपर्क ) नियम आधारित द्विदिशात्मक हाइब्रिड मशीनी अनुवाद प्रणालियों का एक समूह है जो हिंदी, पंजाबी, तेलुगु, तमिल, मराठी, बांग्ला , कन्नड़ और मलयालम

भाषाओं में अनुवाद को सक्षम बनाता है। मुख्य विशेषताओं में शामिल हैं, इन भाषाओं में 100,000 से अधिक शब्दों के वैचारिक शब्दकोश हैं। सिमेटिक फीचर हेरफेर का उपयोग करके वर्ड सेंस डिसएम्बिग्यूएशन मैकेनिज्म, वाक्य पार्सर्स, विशिष्ट बहुभाषिक (पायलट प्रोजेक्ट मोड) की मैपिंग से युक्त स्थानांतरण व्याकरण है यह मशीनी अनुवाद का नवीनतम भारतीय भाषाओं में प्रयास है लेकिन इस मायने में अद्वितीय है कि यह अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी, तेलुगु, तमिल और मलयालम में स्पीच टू स्पीच मशीनी अनुवाद सिस्टम होगा। यह टीडीआईएल, एमआईटी, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित है और संस्थानों के एक समूह द्वारा निष्पादित, अर्थात् आईआईआईटी हैदराबाद द्वारा समन्वित और CALTS, हैदराबाद विश्वविद्यालय, IIT मद्रास, AUKBC, चेन्नई, CDAC ,नोएडा, IIT पटना जैसे संस्थान भी इसमें शामिल हैं।

### भारतीय भाषा प्रौद्योगिकियों के लिए संसाधन केंद्र:

हिंदी, तेलुगु, तमिल, मराठी, बांग्ला, पंजाबी, कन्नड़ आदि भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी संसाधनों के विकास के लिए काम किया गया है। भाषा मंदाकिनी और भारतवाणी अर्थात् भाषा मंदाकिनी और भारतवाणी मल्टीमीडिया के अंतर्गत भारतीय भाषाओं के माध्यम से ज्ञान की श्रृंखला है और यह सीआईआईएल, मैसूरु द्वारा प्रबंधित है। यह भाषाओं के बारे में ज्ञान इकट्ठा करने और उसे दिलचस्प और मनोरंजक तरीके से सीखने की सुविधा के लिए, बहुमाध्यमकोश मल्टीमीडिया वीडियो की एक श्रृंखला प्रदान करता है जो उपयोगकर्ताओं को भाषाई,

सांस्कृतिक, सामाजिक, जातीय और राजनीतिक ज्ञान और विभिन्न भाषा समुदायों के इतिहास से अवगत कराता है।

### जानकारी योग्य वेबसाइटें:

- [https://tdil.meity.gov.in/Research\\_Effort.aspx](https://tdil.meity.gov.in/Research_Effort.aspx)
- [20of%20Electronics%20and%20barrier%3B%20creating%20and%20accessing%20multilingual](https://tdil.meity.gov.in/20of%20Electronics%20and%20barrier%3B%20creating%20and%20accessing%20multilingual)
- <https://sampark.iiit.ac.in/sampark/web/index.php/content>
- [https://cdac.in/index.aspx?id=products\\_services](https://cdac.in/index.aspx?id=products_services)
- <https://cdac.in/index.aspx?id=research>
- <https://cdac.in/index.aspx?id=download>
- [https://www.cdac.in/index.aspx?id=mc\\_ilf\\_indian\\_languages\\_fcft](https://www.cdac.in/index.aspx?id=mc_ilf_indian_languages_fcft)
- <https://ldc.upenn.edu.us>
- <https://www.calts.uohyd.ac.in>
- <https://www.au-kbc.org/projects>
- <https://iitm.ac.in/home/Mysite>
- <https://cfilt.iitb.ac.in>
- <https://sanskrit.uohyd.ac.in>
- <https://english.bhartavani.in>

### निष्कर्ष:

भाषा प्रौद्योगिकी उपकरण और अनुप्रयोगों में आवश्यक ज्ञान आधार के साथ अधिकांश भाषाओं की भागीदारी होती है। प्रौद्योगिकी के माध्यम से भाषाई विविधता को संबोधित किया जाता है। इससे राष्ट्रीय भाषा नीति की गतिविधियों को गति प्राप्त होती है और उपयोगी अनुप्रयोगों का निर्माण किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में भाषा प्रौद्योगिकी का उपयोग ज्यादा उपयोगी रहा है। स्थानीय प्रौद्योगिकियाँ सार्वभौमिक सूचना पहुंच में मदद करती हैं। हमें सीखना और सिखाना के क्षेत्र में भाषाओं की बाधाओं को पार करना होगा। यह हमें भावी

प्रौद्योगिकी के विकास की तरफ ले जाता है। स्कूल से परे उच्च शिक्षा तक शिक्षा के माध्यम की निरंतरता आदर्श बनने जा रही है। भाषा प्रौद्योगिकियाँ भाषाओं को पारदर्शी बनाती हैं। आज के परिवेश में शिक्षा विद्यार्थी की

आवश्यकतानुसार वाली भाषा में होनी चाहिए। प्रौद्योगिकी से छात्र अपनी पसंद की भाषा में उत्तर दे सकते हैं और उसे मूल्यांकनकर्ता की पसंद में बदल दिया जाएगा।



### मिताली दोराई राज

जब महिला क्रिकेट की बात आती है, तो मितालीदोराई राज सचिन तेंदुलकर हैं। उनकी नेतृत्व क्षमता की तुलना एमएस धोनी से की जाती है। उनका बचपन से भरतनाट्यम नृत्यांगना बनने का सपना था। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के मामले में उनके नाम स्पीड के कई रिकॉर्ड हैं। महिला वनडे में उन्होंने सबसे ज्यादा रन बनाए हैं। 2005 में, उन्हें भारतीय महिला वनडे टीम का कप्तान बनाया गया। उन्होंने अपनी असाधारण फिटनेस और दृढ़ संकल्प की बदौलत 20 से अधिक वर्षों तक देश के लिए क्रिकेट खेला है। इसके अलावा, उन्होंने कई सम्मान जीते हैं, जिनमें 2015 में पद्म श्री और 2003 में अर्जुन पुरस्कार शामिल हैं।



### शांता रंगास्वामी

शांता रंगास्वामी एक अनुभवी भारतीय महिला क्रिकेटर हैं जिन्हें अक्सर अग्रणी भारतीय महिला क्रिकेटर कहा जाता है। 1976 से 1991 तक, उन्होंने भारत के लिए 16 महिला टेस्ट क्रिकेट मैचों में भाग लिया और उनमें से 8 प्रतियोगिताओं (1976-77 में 8 और 1983-84 में 4) में टीम की कप्तानी की। शांता की कप्तानी में, भारत ने नवंबर 1976 में पटना के मोइन-उल-हक स्टेडियम में वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना पहला टेस्ट मैच जीता। 1981-82 से 1986 तक, उन्होंने 19 महिला एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में भी भाग लिया और उनमें से 16 प्रतियोगिताओं में टीम की कप्तानी की। शांता 1976 में प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार की प्राप्तकर्ता और बीसीसीआई से महिलाओं के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार की पहली प्राप्तकर्ता भी हैं।

